ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-5* August-2020
Anthology : The Research

कोटा जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का समालोचनात्मक अध्ययन

The Intelligence and Family Environment of Students Who Failed at Secondary Level in Kota District Critical Study

Paper Submission: 13/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

सुरेश चन्द्र मालव
व्याख्याता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
कॅरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में कोटा जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि शहरी व ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की बुद्धि लब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया तो ये दोनो एक दूसरे को प्रभावित करते है या नहीं। अतः उपरोक्त से शोधकार्य की उपयोगिता, महत्व, अनिवार्यता तथा औचित्य स्पष्ट हो जाता है।

शहरी व ग्रामीण छात्रों के बीच सिर्फ विकास या दिमाग का ही नहीं पर प्रारम्भिक वातावरण कौशल, सीखने की क्षमता, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और विभिन्न सुविधाओं की पहुँच एक बड़ा अंतर है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु कोटा जिले के सुल्तानपुर व इटावा के 9 निजी व 2 राजकीय विद्यालयों को लिया गया है। कक्षा 10 के बालकों को ही न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है, जो यादृच्छिक विधि से चुने गए है। अध्ययन में पाया है कि छात्रों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण दोनों ही एक ही सिक्के के दो पहलू है। जिन बालकों की बुद्धिलब्दि तथा वातावरण विद्यार्थियों के अनुकूल है उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी तथा माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की संख्या में कमी की जा सकती है तथा उन्हे अनुकूल वातावरण प्रदान करके अधिक से अधिक सफलता दिलायी जा सकती है।

The research paper presented has critically studied the intelligence and family environment of the students who failed at the secondary level in Kota district. It is known from the study that whether they affect each other if they have studied the intelligence gains and family environment of the students who fail in urban and rural schools. Therefore, from above, the usefulness, importance, inevitability and rationale of research work becomes clear.

There is a big difference between urban and rural students, not only development or brain but early environment skills, learning ability, availability of basic facilities and access to various facilities.

For the study presented, 9 private and 2 state schools have been taken in Sultanpur and Etawah of Kota district. Only Class 10 boys are included as judges, chosen by random method. Studies have found that both the intelligence and family environment of the students are two sides of the same coin. Children whose intelligence and environment is favorable to the students, their educational achievement will be high and the number of students who fail at secondary level can be reduced and they can be given maximum success by providing favorable environment.

मुख्य शब्द : बुद्धिलब्धि, अनुत्तीर्ण विद्यार्थी, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि।
Intelligence, Failed Students, Family Environment, Educational Achievement.

प्रस्तावना

विद्यार्थी राष्ट्र के भावी करणधार है। विद्यार्थी के मानसिक, शारीरिक, स्वास्थ्य पर अधिकाधिक ध्यान प्रत्येक परिवार व राष्ट्र का कर्तव्य है। बच्चे उपयुक्त वातावरण में पले,पढ़े व आगे बढ़े। वर्तमान में बालक का पीछे रहना राष्ट्र की बहुत बड़ी क्षति है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी की प्रगति नहीं होना, अनुत्तीर्ण हो जाना आदि के कई कारण हो सकते है– स्वंय के प्रयत्न का अभाव, पारिवारिक स्थिति का ठीक नहीं होना, विद्यार्थी के परिवार का वातावरण अनुकूल नहीं होना, उसमें सोचने–समझने की शक्ति का कम होना, अधिगम की कमी, स्वाध्याय आदतों की कमी आदि ऐसे कई कारण है जिससे विद्यार्थी का शैक्षणिक विकास नहीं हो पाता है। बालक जन्म से ही कुछ सहज योगताएँ लेकर उपयुक्त उद्दीपन नहीं प्रदान किया जाता है। तो वे योग्यताएँ अपने प्रदत्त स्वरूप में विकसित होती है। बालक का अधिकांश समय परिवार के साथ व्यतीत होता है तथा घर उसकी प्रथम पाठशाला होती हैं, जहाँ से सीखना प्रारम्भ करता है ऐसी अवस्था में यदि उसके लिए उपयुक्त पारिवारिक वातावरण न बनाया जाए तो बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता तथा विद्यार्थी जीवन में वह उच्च उपलब्धियों को प्राप्त नहीं कर सकता।

बुद्धिलब्धि

ब्लण्ड्स एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन के अनुसार – ''जनसंख्या का दो–तिहाई भाग औसत के आस–पास 85 से 115 बुद्धिलब्धि के मध्य होता है। इन्हें बुद्धिलब्धि की दृष्टि से सामान्य श्रेणी में रखा गया।

पारिवारिक वातावरण

डॉ. मजूमदार के अनुसार – परिवार की परिभाषा इस प्रकार है –''परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक मकान में रहते है और जिनमें रक्त का सम्बन्ध होता है, परिवार की उन समस्त सामाजिक भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों एवं उनके जीवन, व्यवहार, स्वभाव, अभिवृत्ति, विकास उपलब्धि तथा प्रेरणा पर प्रकाश डालता है।

अनुत्तीर्ण विद्यार्थी एवं शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तुत शोध में अनुत्तीर्ण वे है जो पिछले वर्ष दसवीं कक्षा की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए जिन्होंने बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा में 36 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त किये है। वर्तमान प्रति स्पर्धात्मक वातावरण में किशोरावस्था के बालकों पर बढ़ते तनाव व दवाब के कारण उसके परीक्षा परिणामों पर दुष्प्रभाव पड़ता है, असफलता उन्हें कहीं का नहीं रखती जिससे उनके मस्तिष्क में अनेक विचारों का द्वन्द्व होता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा प्रभाव पड़ता है और उनकी बुद्धिलब्धि प्रभावित होती है। इसलिए बालकों की बुद्धिलब्धि का उनकी शैक्षिक लपलब्धि पर पड़ने वाले वातावरण के प्रभाव पर अध्ययन किया गया।

साहित्यावलोकन

दीक्षित (1983) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिवारों के विद्यार्थियों की तुलना में शैक्षिक उपलब्धियों में उच्च पाए जाते है।

निधि बाला (2000) ने माता–पिता के व्यवसाय व पारिवारिक आय का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध विषय पर अध्ययन किया।

सैनी एस (2005) माता के कामकाजी व गैर कामकाजी होने का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

सरोज आनन्द एवं सुमनलता (2009) अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार छात्रों के प्रत्यक्षीकृत माता–पिता के व्यवहार दुश्चिन्ता एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
2. ग्रामीण अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
3. ग्रामीण अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
4. शहरी अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
5. ग्रामीण अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं की बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धियों पर श्रेणीवार तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. अनुत्तीर्ण शहरी छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों का पारिवारिक पर्यावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु जनसंख्या के रूप में ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं को लिया गया है। न्यादर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालय के 240 छात्र–छात्राओं को यादृच्छिक प्रतिर्दश की देव–निर्देशन विधि द्वारा चयनित किया गया है।

शोध अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य को निम्न रूप में परिसीमित किया गया – शोध कार्य हेतु कोटा जिले के सुल्तानपुर तथा इटावा क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय से छात्र–छात्राओं का चयन किया गया। जो 10 वीं कक्षा में 2019 की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध में साधारणतः दो प्रकार के उपकरण प्रयुक्त लिए गए है –

1. मानकीकृत उपकरण
2. अमानकीकृत उपकरण

बुद्धि के लिए सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा

डॉ. श्याम स्वरूप जलोटा सामूहिक बुद्धि परीक्षण हेतु डॉ.एस.एस.जलोटा और पारिवारिक वातावरण के लिए

स्वनिर्मित उपकरणों का चयन किया गया। जी.पी भैरी तथा डॉ. जगदीश चन्द्र सिन्हा द्वारा निर्मित किया गया है।

शैक्षिक बुद्धिलब्धि

वार्षिक परीक्षा परिणाम।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में निर्देशित विधि का अनुसरण किया गया है तथा निर्देशित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कक्षा–कक्ष वातावरण में उपकरणों को प्रयुक्त कर वांछनीय आंकड़ों का संकलन सर्वेक्षण विधि से किया गया है, पारिवारिक समंक सूची के लिए मानकीकृत उपकरण डॉ. जी.पी.भहरी तथा डॉ. जगदीश चन्द्र सिन्हा द्वार निर्मित किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विधियों के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों के सन्दर्भ में मध्यमान, मानक विचलन, टी–मूल्य, प्रतिशत विधि का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध के चर – प्रस्तुत शोध में निम्न चर है।

1. **स्वतंत्र चर –** शहरी व ग्रामीण विद्यार्थी।
2. **परतन्त्र चर –** बुद्धिलब्धि व पारिवारिक वातावरण।

शहरी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना

शहरी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर सारणी 4.1 में विश्लेषण किया गया है–

सारणी क्रमांक 1

शहरी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर सारणी 1 में विश्लेषण किया गया है

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	समग्र शहरी विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	1	0.83
अत्युत्तम	9	7.50
उत्तम	10	8.33
तीव्र	12	10
औसत	15	12.50
कम कुशल	16	13.33
मंद	22	18.33
योग	120	100.00

शहरी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का प्रतिशतवार विवरण इस प्रकार है–

1. प्रतिभावान 0.83 प्रतिशत विद्यार्थी 7.50 प्रतिशत अत्युत्तम 8.33 प्रतिशत उत्तम प्रतिशत 10 तीव्र बुद्धि के एवं 12.50 प्रतिशत औसत बुद्धि के विद्यार्थी पाए गए।
2. कम कुशल बुद्धि के 13.33 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए।
3. अधिकांश छात्राएं मंद बुद्धि की 18.33 प्रतिशत पाए गए।

ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना

ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर सारणी 2 में विश्लेषण किया गया है–

सारणी क्रमांक 2

ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	समग्र ग्रामीण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	1	0.83
अत्युत्तम	1	0.83
उत्तम	5	4.17
तीव्र	4	3.33
औसत	5	4.17
कम कुशल	15	12.50
मंद	24	20.00
योग	120	100.00

ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का प्रतिशवार वितरण इस प्रकार है

1. प्रतिभावान एवं अत्युत्तम 0.83 प्रतिशत विद्यार्थी 4.17 प्रतिशत उत्तम 3.33 प्रतिशत तीव्र बुद्धि के एवं 4.17 प्रतिशत विद्यार्थी औसत बुद्धि के पाए गए।
2. कम कुशल बुद्धि के 12.50 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए।
3. अधिकांश विद्यार्थी मंद बुद्धि के 20 प्रतिशत पाए गए।

शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि

शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीनुसार तुलनात्मक विश्लेषण सारणी क्रमांक 3 में प्रस्तुत किया जा रहा है –

सारणी क्रमांक 3

शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीवार	छात्रों की बुद्धिलब्धि		छात्राओं की बुद्धिलब्धि	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	1	0.83	1	0.83
अत्युत्तम	9	7.50	1	0.83
उत्तम	10	8.33	5	4.17
तीव्र	12	10.00	4	3.33
औसत	15	12.50	5	4.17
कम कुशल	16	13.33	15	12.50
मंद	22	18.33	24	20.00
योग	120	100.00	120	100.00

उपरोक्त सारणी से निम्न परिणाम पलिक्षित होते है –

1. शहरी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों (छात्र 120) तथा ग्रामीण विद्यार्थियों (छात्र 120) क्रमशः 0.83 प्रतिशत शहरी एवं (0.83 प्रतिशत) ग्रामीण विद्यार्थी प्रतिभावान 7.50 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थी उत्तम 10.00 प्रतिशत शहरी विद्यार्थी एवं 3.33 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थी तीव्र बुद्धि के तथा 12.50 प्रतिशत शहरी विद्यार्थी एवं 4.17 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थी की बुद्धिलब्धि औसत श्रेणी की पाई गई।
2. शहरी विद्यार्थियों में कम कुशल बुद्धिलब्धि के विद्यार्थी 13.33 प्रतिशत एवं मंद बुद्धिलब्धि के 18.33 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों में कम कुशल बुद्धिलब्धि के 12.50 प्रतिशत एवं मंद बुद्धि 20. 00 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए।

शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का मध्यमान –

शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

सारणी क्रमांक 4

शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्षेत्र	कथनों की संख्या	छात्र		छात्राएँ	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
माता स्वीकारोक्ति	27	16.43	3.33	15.57	3.21
पिता स्वीकारोक्ति	25	15.79	3.27	14.79	3.23
माता एकाग्रता	21	12.56	2.59	11.92	2.58
पिता एकाग्रता	20	11.13	3.23	10.61	2.74
माता अस्वीकारोक्ति	31	14.10	4.46	15.09	4.56
पिता अस्वीकारोक्ति	26	11.37	4.11	13.25	4.39
कुल	150	81.38	12.09	81.23	11.22

शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का तुलनात्मक विश्लेषण

शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण सारणी 5 में प्रस्तुत किया जा रहा है–

सारणी क्रमांक 5

शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का तुलनात्मक विश्लेषण –

क्षेत्र	शहरी विद्यार्थी		ग्रामीण विद्यार्थी		टी–मान	05/01 स्तर पर सार्थकता
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
माता स्वीकारोक्ति	16.43	3.33	15.57	3.21	2.06	.05 पर सार्थक
पिता स्वीकारोक्ति	15.79	3.21	14.79	3.23	1.55	सार्थक नहीं
माता एकाग्रता	12.56	2.59	11.92	2.58	0.88	सार्थक नहीं
पिता एकाग्रता	11.13	3.23	10.61	2.74	0.88	सार्थक नहीं
माता अस्वीकारोक्ति	14.10	4.46	15.09	4.56	1.10	सार्थक नहीं
पिता अस्वीकारोक्ति	11.37	4.11	13.25	4.39	2.21	.05 पर सार्थक
कुल	81.38	12.09	81.23	11.22	0.07	सार्थक नहीं

अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए निर्देशन कार्यक्रम

1. विद्यार्थियों के माता–पिता की अस्वीकारोक्ति विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। बच्चों के साथ पारिवारिक सम्बन्धों को माता–पिता को ध्यान में रखना चाहिये। माँ बालक की प्रथम पाठशाला होती है, माता–पिता अपने बच्चों की परवरिश पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। बच्चों को माता–पिता बच्चों को कष्टित न करें, इसके लिए ऐसे बच्चों के माता–पिता को समय–समय पर प्राचार्य को विद्यालयों में अभिभावक बैठक में बुलाकर अपने बच्चों के लालन–पालन में आने वाली कमी तथा उसके परिणामों से अवगत कराना चाहिये।
2. माता–पिता को बुद्धि परीक्षण तथा अन्य साधनों से यह पता लगाना चाहिये कि क्या उनकी संतान कम बुद्धिलब्धि की है ? प्रस्तुत शोध में उत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि सामान्य तथा सामान्य से कम पाई गई, उनके कारणों का माता–पिता को पता लगना चाहिये। विद्यालय के शिक्षकों को भी बुद्धिलब्धि कम होने के कारणों का पता लगाकर अभिभावक को अवगत करना चाहिये।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों पर किया गया, इसी तरह इन्हीं चरों अथवा अन्य चरों को लेकर प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के उत्तीर्ण विद्यार्थियों पर भी शोधकार्य किया जा सकता है।
2. इसी तरह का शोधकार्य शासकीय तथा निजी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श बहुत सीमित है, इसी तरह का शोध बड़े न्यादर्श को लेकर किया जा सकता है।
4. शोधकर्ता ने समयाभाव के कारण अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के बुद्धिलब्धि एवं पारिवारिक समस्याओं का ही अध्ययन किया। इस अध्ययन को और विस्तार से अन्य घटकों, शारीरिक घटक, सामाजिक एवं संवेगात्मक घटक, व्यक्तिगत एवं मानसिक घटक, अधिगम कठिनाईयों से सम्बन्धित घटकों तथा अधिक न्यादर्श पर करने की आवश्यकता है।
5. कुछ विद्यार्थियों पर गहन अध्ययन के लिए केस स्टडी की जा सकती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में शोध सारांश, मुख्य निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। साथ ही अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए निर्देशन कार्यक्रम हेतु सुझाव एवं भावी शोध हेतु भी सुझाव प्रस्तुत किए गए है। शोधकर्त्ता को आशा है कि प्रस्तुत शोधकार्य अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों, अध्यापकों एवं प्राचार्यों का मार्ग प्रशस्त करेगा।

प्रस्तुत शोध बालकों के शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक वातावरण, अभिभावक सम्बन्ध व बुद्धिलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव पर कोई कार्य नहीं हुआ है। इससे इसके अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *अग्रवाल, राम नारायण, ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
2. *एलिस, आर.एस.1951, एजुकेशन साइकोलॉजी*
3. *भाटिया, निर्मल, ''शिक्षा में मनोविज्ञान के सिद्धान्त और प्रविधियाँ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1978*
4. *भटनागर, सुरेश, शिक्षा मनोविज्ञान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1985*
5. *भटनागर, सुरेश, शिक्षा में मनोविज्ञान, इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 1980*
6. *भार्गव, ऊषा, किशोर मनोविज्ञान*
7. *गेरेट गेनरी, 'शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी', कल्याण पब्लिकशनर्स, 1978*
8. *जायसवाल, सीताराम, ''शिक्षा मनोविज्ञान'', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1967*
9. *क्रो एण्ड क्रो, 1965, एजुकेशन साइकोलॉजी।*
10. *शर्मा, आर.ए. 1990, शिक्षा तकनीकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ*
11. *शर्मा, गणपत राय, व्यास, ''अधिगम और विकास के मनोसामाजिक आधार हरिशचन्द्र*
12. *वर्मा, डॉ. रामपाल सिंह, शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान 2002 उपाध्याय, प्रो. राधा विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा वल्लभ।*
13. *वर्मा, प्रीति, श्रीवास्तव, डी. मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा*
14. *वाजपेजी, एस.आर., सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण*
15. *व्यास, हरिशचन्द्र, कैलाश शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविकास सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।*